लोक सभा वाद-विवाद

का

हिन्दी संस्करण

[तीसरा सत्र]

सत्यमेव जयते

[खंड 6 में अंक 21 से 30 तक हैं]

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

विषय-सूची

(सप्तम माला, खण्ड 6, तीसरा सत्र, 1980)

सोमवार, 14 जुलाई, 1980/23 आषाढ, 1902 (शक)

विषय	पृष्ठ
निधन संबंधी उल्लेख	
(श्री दीनेन भट्टाचार्य, संसद सदस्य का निधन)	1
अध्यक्ष महोदय	1
श्रीमती इन्दिरा गांधी	1
श्री जार्ज फर्नान्डीज	2
श्री समर मुखर्जी	2
श्री एस० मुरुगैयन	3
श्री सतीश अग्रवाल	3
श्री यशवन्तराव चव्हाण	3
श्री रवीन्द्र वर्मा	4
श्री इन्द्रजीत गुप्त	4
श्री ए० नीलालोहिथादासन	5
श्री पीयूष तिरकी	5
श्री जयपाल सिंह कश्यप	6
श्री चित्त बसु	6
श्री इब्राहीम सुलेमान सेठ	6
श्री ख्वाजा मुबारक शाह	7

लोक सभा वाद-विवाद (हिन्दी संस्करण)

लोक-सभा

सोमवार, 14 जुलाई, 1980/23 आषाढ़, 1902 (शक)

लोक सभा ग्यारह बजे समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

निधन सम्बन्धी उल्लेख

(श्री दीनेन भट्टाचार्य, संसद सदस्य का निधन)

अध्यक्ष महोदय : मुझे सदन को, सभा के वर्तमान सदस्य श्री दीनेन भट्टाचार्य के दुखद निधन का समाचार देना है। श्री भट्टाचार्य इस सदन में पश्चिम बंगाल के सीरमपुर चुनाव क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे, आज प्राप्तः ही नई दिल्ली में उनका देहान्त हो गया। वह 65 वर्ष के थे। मैं शुक्रवार, 11 जुलाई, 1980 को श्री दीनेन भट्टाचार्य को मिलने अस्पताल गया। वह काफी प्रसन्नचित्त दिखाई दे रहे थे और मैं इस बात की आशा नहीं कर सकता था कि उनका जीवन इतनी जल्दी समाप्त हो जायेगा।

श्री दीनेन भट्टाचार्य इसके पूर्व 1962-67 तथा फिर 1971-79 तक तीसरी, पांचवीं तथा छठी लोक सभा के सदस्य भी रहे।

एक कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता तथा मजदूर संघ नेता होने के नाते श्री भट्टाचार्य ने विभिन्न मजदूर संघों के सचिव, उप-प्रधान तथा प्रधान के रूप में कार्य किया। उन्होंने 10 वर्ष से भी अधिक समय तक सीरमपुर नगरपालिका के आयुक्त के रूप में भी कार्य किया। वह अखिल भारतीय रबड़ तथा टायर मजदूर महासंघ के प्रधान भी रहे।

वह छठी लोक सभा की नियम समिति के सदस्य भी रहे।

उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक देशों का भ्रमण किया था।

उनकी मृत्यु से हमने एक ऐसा सक्रिय सांसद खो दिया है जो कि सदन की कार्यवाही में गहरी रुचि लिया करता था और चर्चा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता था।

हम अपने इस मित्र के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं और मुझे आशा है कि शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करने में सदन भी मेरे साथ ही है।

प्रधानमन्त्री (श्रीमती इन्दिरा गान्धी) : श्री दीनेन भट्टाचार्य के निधन पर अपने उदगार व्यक्त किये है मैं अपने तथा अपने दल की उनसे सम्बद्ध करती हूं। वह अनेक वर्षों तक इस सदन के सदस्य रहे। अपने दीर्घकालीन संसदीय जीवन के दौरान वह सदा ही औद्योगिक श्रमिकों के हितों के लिए संघर्ष करते रहे। 1960 तथा 1970 के दशकों में उन्होंने अपने विपक्षीय निकायों में भाग लिया तथा मजदूर संघों के हितों की सुरक्षा हेतु अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस समय भी औद्योगिक सम्बन्धों के क्षेत्र में वह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते थे।

मैं अपने दल तथा सदन की ओर से आपसे अनुरोध करती हूं कि आप हमारी हार्दिक संवेदना शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों तक पहुंचा दें।

श्री जार्ज फर्नान्डीस (मुजफ्फरपुर) : अध्यक्ष महोदय मैं अपने दल की ओर से और अपनी ओर से श्री दीनेन भट्टाचार्य को श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए खड़ा हुआ हूं । दीनेन बाबू देश के स्वातंत्र्य संग्राम के सेनानियों में थे और इस देश के मजदूर आन्दोलन के एक महान नेताओं में थे। इस सदन में और इस सदन के बाहर जनता की समस्याओं पर और विशेषकर शोषित वर्ग के लोगों की समस्याओं पर संघर्ष उनके जीवन का कार्य रहा है । हम लोगों के वह बहुत ही मित्र रहे और इस सदन के भीतर और बाहर उनका हंसमुख चेहरा जिन परेशानियों से वह गुजरते थे उसको कभी व्यक्त नहीं करते थे । हमने इस सदन में छठी लोक सभा में और इस लोक सभा में बहुत नजदीक से उनको देखा और उन से हमारे सम्बन्ध भी रहे मगर कभी गुस्सा वगैरह करते हुए उस व्यक्ति को हम ने नहीं देखा क्योंकि हमारी यह समझ है कि दीनेन बाबू जैसे व्यक्ति व्यवस्था से लड़ते थे, व्यवस्था से गुस्सा करते थे, किसी व्यक्ति से उनका गुस्सा या नफरत नहीं रहती थी । तो ऐसे एक स्वातंत्र्य संग्राम सेनानी को और इस देश के मजदूर आन्दोलन के महान कार्यकर्ता को आज हमने खोया है । मुझे मालूम है उनका समूचा जीवन श्रमिक वर्ग के लिए समर्पित रहा और अपना परिवार बनाने की बात उन्होंने कभी सोची भी नहीं मगर जो भी उनके परिवार के और रिश्ते के लोग हैं उनको हम अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से संवेदना देना चाहते हैं और उनकी पार्टी मार्क्सिस्ट कम्यूनिस्ट पार्टी के साथियों को विशेष रूप से हम अपनी संवेदना देना चाहते हैं ।

एक बार फिर हम अपने दल की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

श्री समर मुखर्जी (हावड़ा) : श्री दीनेन भट्टाचार्य का निधन बहुत आकस्मिक हुआ है । अभी 9 तारीख को ही वह सभा में उपस्थित थे। परन्तु उनका स्वास्थ्य ठीक न था । उन्हें दमें की बीमारी थी । यह पुराना रोग था जो अनेक वर्षों से चला आ रहा था । परन्तु डाक्टर के परामर्श के बावजूद भी वह श्रमिक वर्ग द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली किसी भी मांग के संबंध में हुए आन्दोलनों में प्रायः भाग लेते रहते थे। कई नियोजक उनके माध्यम से समझौते तथा बातचीत करने की अपेक्षा भी करते थे । अतः उनके लिए अपने स्वास्थ्य का महत्व अधिक नहीं था । अचानक उनके स्वास्थ में गिरावट आ गई । जब मैंने इस सम्बन्ध में जानना चाहा तो मुझे बताया गया कि कुछ नियोजक अपने विवाद का निपटारा करवाने के लिए उन्हें अपने चुनाव-क्षेत्र ले जाना चाहते थे और वह 6 तथा 7 तारीख को वहां गये भी । यद्यपि वह वहां विमान द्वारा गये तथा वापिस आये तो भी कलकत्ता तथा दिल्ली हवाई अड्डों पर वह वर्षा में पूर्णतया भींग गये जिसका प्रभाव उनके फेफड़ों पर पड़ा । अतः उन्होंने बताया कि उन्हें सर्दी लग गई है क्योंकि उन्हें विमान में चढ़ते समय तथा फिर दिल्ली से उतर कर वापिस आते समय वर्षा में भींगना पड़ा। इसीलिए उनका स्वास्थ्य अचानक बिगड़ गया ।

अस्पताल के चिकित्सा अधिकारियों ने अपनी ओर से उनका जीवन बचाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया परन्तु दुर्भाग्यवश वह उन्हें बचा नहीं सके। दीनेन भट्टाचार्य का जीवन एक सच्चे क्रान्तिकारी का जीवन था । वह एक निष्ठावान् राजनीतिज्ञ थे और अपने जीवन के आरम्भिक काल में ही स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े । उनका जन्म 1915 में हुआ था परन्तु वह 1930 के आन्दोलन में अर्थात 15 वर्ष की आयु में ही जेल चले गये । उसके बाद अनेक बार 1940, 1949, तथा 1950 में तथा उसके बाद भी उन्हें जेल जाना पड़ा । छोटी आयु में ही वह मजदूर संघ आन्दोलन तथा साम्यवादी आन्दोलन की ओर आकृष्ट हो गये । वह अविवाहित थे तथा हम अपने शब्दों में उन्हें पूर्णकालिक कार्यकर्ता की संज्ञा दिया करते थे । वह बहुत ही कर्मठ मजदूर नेता थे । वह हिन्दुस्तान मोटर वर्कर्स यूनियन के महासचिव भी थे । मजदूर संघ आन्दोलन में वह अखिल भारतीय स्तर के नेता थे। अपनी ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, स्पष्टवादिता के कारण स्पष्टवादी थे । जो उन्हें जानते तथा जिन्होंने उन्हें यहां देखा था, वह जानते है कि वह स्पष्टवादी थे, उन्होंने संसद में हमारे दल के मुख्य सचेतक तथा तदुपरान्त दल के उप-नेता के रूप में काफी समय तक कार्य किया । वह अपने संसदीय राजनीतिक तथा मजदूर संघ गतिविधियों के क्षेत्र में काफी सक्रिय रहे । श्री दीनेन भट्टाचार्य के निधन से श्रमिक वर्ग के आन्दोलन, लोकतांत्रिक आन्दोलन तथा हमारे दल को भारी क्षति हुई है । वह पश्चिम बंगाल के बहुत बड़े नेता थे ।

हमारे लिए उनका निधन निश्चय ही विशेष रूप से बहुत बड़ी क्षति है । मैं आपसे निवेदन करता हूं कि सम्पूर्ण सदन में व्यक्त किये गये उद्गार उनके परिवार तथा सम्बंधियों तक पहुंचा दिये जायें।

***श्री एस० मुरुगैयन** (तिरुपत्तूर) : अध्यक्ष महोदय मैं अपने तथा अपने दल द्रविड़ मुनत्र करगम की ओर से श्री दीनेन भट्टाचार्य के दुःखद निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता हूं । अभी कल तक वह हमारे बीच थे । वह एक सुप्रसिद्ध तथा कर्मठ मजदूर नेता थे। उनके निधन से देश के मजदूर संघ आन्दोलन ने एक ऐसा नेता खो दिया है जो इसके विकास के लिए कटिबद्ध था । वह एक क्रांतिकारी होते हुये भी लोकतांत्रिक आदर्शों का सम्मान करते थे । अभी दो दिन पहले की ही बात है कि वह मेरे सामने वाली सीट पर बैठे हुए चर्चा में भाग ले रहे थे तथा एक माननीय सदस्य के भाषण की कुछ त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट कर रहे थे । यद्यपि उनकी आयु काफी थी परन्तु फिर भी वह देखने से यौवन से परिपूर्ण लगते थे।

मैं आपके द्वारा सदन के नेता द्वारा तथा साम्यवादी दल (मार्क्सवादी) के नेता द्वारा उनके निधन पर व्यक्त की गई संवेदना के साथ अपने आपको सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी भावनाओं को शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा दिया जाये।

श्री सतीश अग्रवाल (जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, श्री दीनेन भट्टाचार्य के निधन के संबंध में जो भावनायें आपने व्यक्त की हैं और सदन की नेता महोदया और अन्य नेताओं ने जो विचार प्रकट किए हैं, मैं अपने आप को भी उनमें सम्मिलित करता हूं।

श्री दिनेन भट्टाचार्य से मेरा परिचय सन् 1977 में जब मैं पहली बार इस सदन में आया था, तब हुआ था । पिछले तीन वर्षों में मैंने उनको बहुत नजदीक से देखा और यह पाया कि उनके मन में व्यक्तिशः किसी के खिलाफ कोई गुस्सा या नाराजगी नहीं थी, लेकिन जब मजदूरों के हकूक के हनन का कोई सवाल आता था तो उनको काफी वेदना होती थी और गुस्से का इजहार भी करते थे। सदन के माननीय सदस्यों को अहसास होगा, शास्त्री जी और मुझे तो पता है, गत बृहस्पतिवार या बुधवार को भी किसी मसले पर उनको गुस्सा आने लगा था। हम उनको रोका करते थे और कहते थे कि आप इतना गुस्सा न करें । वे बड़े सहज स्वभाव, सरल स्वभाव और हसंमुख रहने वाले व सदैव जीवनभर मजदूरों के लिए संघर्ष करने वाले नेता थे, जो आज हमारे बीच से उठ गए । यह क्षति उनके परिवार को ही नहीं है, जिस आन्दोलन से वे संबंधित थे, उस आन्दोलन की भी बहुत बड़ी क्षति हुई है । इसलिए उनके परिवारजनों और रिश्तेदारों को तो संवेदना संदेश भिजवाइए ही, लेकिन साथ ही कम्यूनिस्ट पार्टी (मार्क्सिस्ट) और उनके साथी कार्यकर्ताओं तक भी हमारी भावनायें पहुंचायें ।

इन शब्दों के साथ मैं हृदय से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

श्री यशवंत राव चव्हाण (सतारा) : अध्यक्ष महोदय जब मैं तीसरी लोकसभा के कार्यकाल में संसद में आया, तब से मैं श्री दीनेन भट्टाचार्य को जानता हूं। उस समय से मैं उन्हें सदन में किसी न किसी रूप में भूमिका निभाते हुए देखता आ रहा हूं। पहले वह भारतीय साम्यवादी दल का प्रतिनिधित्व करते थे और बाद में भारतीय साम्यवादी दल (मार्क्सवादी) का प्रतिनिधित्व करने लगे । उनका अपना निजी कोई परिवार नहीं था क्योंकि उन्होंने विवाह नहीं किया था; सम्भवतः श्रमिक वर्ग आन्दोलन तथा उनका दल ही उनका परिवार था। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जो पूर्णतया देश के प्रति समर्पित थे; क्योंकि उन्होंने अपने जीवन के आरम्भिककाल में ही स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेना आरम्भ कर दिया और वह लोगों के हितों की सुरक्षा तथा विशेष रूप से श्रमिक वर्ग के हितों की सुरक्षा के लिए पूर्णतया समर्पित

*तमिल में दिए गए भाषण के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी रूपान्तर ।

थे। जब कभी भी वह सदन में उठकर खड़े होते थे तो वह एक बूढ़े क्रोधित व्यक्ति के रूप में दृष्टिगोचर होते थे। परन्तु जब वह बैठ जाते थे तो उनके चेहरे पर मुस्कराहट होती थी। उनका क्रोध मात्र विषय से सम्बद्ध होता था। वह वास्तव में क्रोधी स्वभाव वाले व्यक्ति नहीं थे। उनके साथ बातचीत करने में आनंद आता था।

मुझे दुःख है कि 65 वर्ष की आयु कोई बहुत बड़ी आयु नहीं थी क्योंकि आजकल तो लोग 75 तथा 80 वर्ष तक तथा उससे भी आगे तक जीते हैं। इसलिए मेरे विचारानुसार यह असामयिक मृत्यु है और भारतीय साम्यवादी दल (मार्क्सवादी) के लिए यह बहुत बड़ी क्षति है। हम उनके दल के प्रति और इस प्रकार स्वाभाविक रूप से लोक सभा तथा राष्ट्र के प्रति इस क्षति पर गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

आप हमारी संवेदना सभी सम्बद्ध व्यक्तियों तक पहुंचा दें।

श्री रवीन्द्र वर्मा (बम्बई-उत्तर) : मेरे दल के सभी सदस्य, अपने प्रिय साथी श्री दीनेन भट्टाचार्य के अचानक निधन पर सदन में व्यक्त किये गये गहरे शोक के साथ अपने को सम्बद्ध करते हैं। वह बहुत ऊंचे आदर्शों वाले, तथा समर्पण व निष्ठा की भावना से ओत-प्रोत व्यक्ति थे तथा विशेष रूप से देश के श्रमिक वर्ग तथा गरीब लोगों के प्रति समर्पित थे। एक स्वतन्त्रता सेनानी, एक मजदूर नेता, तथा औद्योगिक शांति स्थापित करने तथा देश के समाज के समक्ष ऊंचे आदर्श स्थापित करने के सन्दर्भ में उन्होंने जो भूमिका निभाई है, वह निश्चय ही एक आदर्श भूमिका है। वह एक ऐसे सचेत तथा कर्मठ संसद सदस्य थे जो अपनी बात की वकालत बहुत निर्भीकतापूर्वक करते थे तथा उस पर अडिग रहते थे परन्तु इसके बावजूद भी वह स्नेह तथा मित्रता की मूर्ति थे। उनके निधन से सदन ने एक बहुत ही सतर्क, समर्पित ईमानदार तथा अटल सत्य निष्ठा वाला संसद सदस्य खो दिया है। हममें से अधिकांश लोग जो श्री दीनेन दादा को जानते हैं उनके लिए निश्चय ही यह एक ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति नहीं की जा सकती। उनकी मित्रता, कार्यकुशलता, तथा उन मूल्यों के प्रति उनकी समर्पणता जिनका कि हम भी सम्मान करते हैं, हमें सदा याद रहेगी।

मैं सदन के उन अन्य सदस्यों के साथ जिन्होंने आपसे श्री दीनेन भट्टाचार्य के शोक संतप्त परिवार तथा उनके संगठनों को अपनी संवेदना व्यक्त करने का आग्रह किया है, अपने आपको भी सम्बद्ध करता हूं।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (बसिरहाट) : श्री दीनेन भट्टाचार्य का अचानक निधन न केवल एक भंयकर आघात है बल्कि हम सबके लिए एक बड़ी क्षति है। कल मैंने उनको अस्पताल में देखा था। मुझे बताया गया था कि उनकी हालत पहले ही बिगड़ रही थी और डाक्टरों की यह राय थी कि उनके बचने की कोई आशा नहीं, किन्तु फिर भी वह जीवित थे और हांफ-हांफकर श्वास ले रहे थे। मैंने अंतिम दिन जब वह यहां थे, उनसे बातचीत की थी। मैं बाहर उनके साथ उपहास कर रहा था। मैंने उनसे पूछा था कि उनका स्वास्थ्य कैसा है। उन्होंने मुझे बताया कि वह पहले से अच्छा महसूस कर रहे हैं। किन्तु उन्हें अचानक ठंड लग गई। अब मुझे समर बाबू से ज्ञात हुआ है कि यह सब उनके वर्षा में भीग जाने के कारण हुआ। श्री दीनेन भट्टाचार्य ने बताया कि उन्हें ठंड लग गयी है और श्वास लेने में कठिनाई हो रही है। फिर भी हम इन बातों पर नियंत्रण करने की स्थिति में नहीं हैं और यही समझा जा सकता है कि जो कुछ भी सहायता चिकित्सा दी जा सकती है, दी गयी है। फिर भी ऐसी दुःखद घटनायें होती ही हैं। बहुत वर्ष पहले जब हम एक ही दल में थे, तो श्री दीनेन भट्टाचार्य और मैंने मजदूर संघ अभियान में वास्तव में एक साथ बहुत ही निकट रहकर काम किया था। गत कुछ वर्षों में विशेष रूप से स्वतंत्रता से पूर्व, मुझे स्मरण है कि हम कलकत्ता के आसपास पटसन मिल श्रमिकों के बीच एक साथ बहुत ही निकट काम कर रहे थे। महोदय, आप जानते हैं कि उन दिनों में पटसन मिल श्रमिकों को हमारे देश में बहुत ही शोषित श्रमिक समझा जाता था। उस समय ये मिलें ब्रिटिश कम्पनियों के स्वामित्व में होती थी। जिन बस्तियों में ये श्रमिक रहते थे, उन्हें एक बार श्री जवाहरलाल नेहरू ने मानव-निवास के लिये अयोग्य बताया

था। दीनेन बाबू, मैं और कई दूसरों ने इन बस्तियों में इन श्रमिकों को संगठित करने के प्रयास में घूमते हुये अनेक वर्ष व्यतीत किये और हमने उनके संघर्षों और हड़तालों में भाग लिया ।

बाद में, जब दीनेन बाबू इस सभा के लिये चुने गये, जैसा कि अन्य सहयोगियों ने भी उल्लेख किया है, वे सदैव लोकतांत्रिक उद्देश्यों एवं श्रमिकों वर्गों के अधिकारों के एक बहुत अटल समर्थक रहे। वह पूरी तरह हमारे पुराने समय के व्यक्तियों में से एक थे। इसलिये मैं अनावश्यक रूप से पहले कही हुयी बातों में कुछ और नहीं जोड़ना चाहता। हम बहुत बड़ी गहनता से इस क्षति को महसूस करते हैं और हम मार्क्सवादी साम्यवादी दल के अपने सहयोगी तथा दीनेन बाबू के परिवार के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त करते हैं। मेरे विचार में उन्होंने अपने पीछे बड़ा परिवार नहीं छोड़ा है। किन्तु उनके भाई कल यहां थे और उनके तथा दूसरों के प्रति हम गहन संवेदनायें व्यक्त करते हैं। । मुझे पूरा विश्वास है कि इस सभा में दीनेन बाबू की स्मृति का उनके अनेक गुणों के जिनका उल्लेख अनेक सहयोगियों ने किया है, कारण सदैव सम्मान किया जाता रहेगा और मैं तथा मेरे दल अपने आप को उनके द्वारा व्यक्त की गयी भावनाओं के साथ सम्बद्ध करता हूं।

श्री ए० नीलालोहितदासन (त्रिवेन्द्रम) : मैं तथा इस सभा में मेरे अन्य मित्र अपने को श्री दीनेन भट्टाचार्य के अचानक एवं दुखद निधन पर आप तथा विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं द्वारा व्यक्त भावनाओं के साथ सम्बद्ध करते हैं। श्री दीनेन भट्टाचार्य बचपन से ही राष्ट्रीय आन्दोलन एवं श्रमिक वर्ग आन्दोलन में पूरी तरह व्यस्त रहते थे और अपने परिवार के बारे में सोचने का समय भी नहीं मिला। वह जीवन भर अविवाहित रहे। किन्तु वह बंगाल से संबंधित एक ऐसे व्यक्ति थे जो भारतीय नवजागरण के दिनों के दौरान भी भारतीय राष्ट्रीयता के लिये विख्यात थे। वह समूचे भारत को अपने परिवार तथा श्रमिक वर्ग को अपने परिवार के सदस्यों के रूप में समझते थे सी० आई० टी० यू० की कार्यकारिणी समिति के एक सदस्य तथा पश्चिम बंगाल यूनिट के उप-प्रधान एवं विभिन्न मजदूर संघों के प्रधान और सचिव के रूप में वह उन्नति करके राष्ट्रीय दर्जे के श्रमिक संघ नेता बन गये । तीसरी, पांचवी, छटी और वर्तमान लोक सभा के सदस्य के रूप में उन्होंने अपने आप को बहुत ही अच्छे सांसद के रूप में सिद्ध किया । वे कई राहत समितियों तथा पुस्तकालयों के सदस्य थे और इस प्रकार उन्होंने अपने आप को एक बहुत ही अच्छे एवं उत्कृष्ट सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सिद्ध किया । उनके निधन से हमने एक बहुत ही अच्छे सांसद तथा सामाजिक कार्यकर्ता एवं एक श्रमिक संघ के नेता को खो दिया है जो जनता जनार्दन और कमजोर वर्गों के उद्देश्यों के प्रति समर्पित था। हमने उन्हें बहुत ही कठिन समय में खो दिया है जब कि समस्त श्रमिक वर्ग आन्दोलन, वामपंथी दलों और हमारे राष्ट्र के लोकतांत्रिक समाजवादी शक्तियों को उन विभिन्न समस्याओं का जिनका सामना हमारा देश कर रहा है, समाधान ढूंढने के लिये उन जैसे सिपाहियों की बड़ी आवश्यकता है।

इस सभा में लोकतांत्रिक समाजवादी दल के सदस्यों, अपने नेता श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा तथा स्वयं अपनी ओर से मैं हार्दिक संवेदनायें व्यक्त करता हूं और श्री समर मुखर्जी को प्रार्थना करता हूं कि वह हमारी भावनाओं को अपने दल के साथियों एवं श्रमिक वर्ग तक पहुंचा दें।

श्री पीयूष तिरकी (अलीपुरद्वारा) : महोदय, श्री दीनेन भट्टाचार्य के निधन पर, सभा के माननीय सदस्यों द्वारा जो शोक व्यक्त किया गया, अपने दल की ओर से मैं अपने को उससे सम्बद्ध करता हूं। उनका जन्म 1915 में हुआ था। 15 वर्ष की छोटी आयु में 1930 में उन्हें देश के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गिरफतार किया गया था। 1947 तक, उन्हें कई बार गिरफतार किया गया । वह एक पुराने मजदूर संघी तथा हिन्दुस्तान मोटर्स लिमिटेड वर्क्स यूनियन के संयुक्त सचिव थे जिसके वह संस्थापक थे। वह एक निष्ठावान, ईमानदार, सच्चे और स्पष्टवक्ता व्यक्ति थे। अपने दल, आर० एस० पी० की ओर से मैं भारतीय साम्यवादी दल (मार्क्सवादी) के पुलिट-ब्यूरो तक पहुंचाने के लिये अपना हार्दिक दुख व्यक्त करता हूं क्योंकि वह जीवन भर इस पारिवारिक समूह के साथ संबंधित रहे।

श्री जयपालसिंह कश्यप (आंवला) : माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री दीनेन भट्टाचार्य के निधन पर सदन को बड़ा दुःख है। उसमें मेरा दल और मैं दोनों ही सम्मिलित हैं।

भट्टाचार्य जी देश के मजदूर आन्दोलन के प्रमुख स्तम्भों में थे जिन्होंने जीवनभर मजदूरों और गरीबों के लिए संघर्ष किया। वे एक सचेत पार्लियामेन्टेरियन थे और उन्होंने पूरे देश और अपने दल को ही अपना एक परिवार बना लिया था। उन्होंने अपने जीवन में शादी न करके बड़ी कुर्बानी की और मरते समय तक वे इस देश के गरीबों और मजदूरों के लिए संघर्ष करते रहे, उनके हित-साधक बने रहे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया और उसके बाद भी वे जीवन में बराबर संघर्ष करते रहे। देश में एक सचेत प्रहरी की तरह और एक सचेत पार्लियामेन्टेरियन बन कर उन्होंने जो कुछ भी देश के लिए किया उसे हम भुला नहीं पायेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी तरफ से और अपने दल जनता (एस) की तरफ से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और माननीय अध्यक्ष महोदय से अनुरोध करता हूं कि उनके दल को, उनके समस्त साथियों को और उनके परिवार को हमारे संवेदना संदेश भेज दें।

श्री चित्त बसु (बारसाट) : महोदय, साथी श्री दीनेन भट्टाचार्य के आकस्मिक निधन पर आप तथा अन्य सदस्यों द्वारा जो दुख तथा पीड़ा व्यक्त की गयी है, अपने आपको उसके साथ सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन् साथी दीनेन भट्टाचार्य का जीवन एक क्रांतिकारी प्रतिभा का जीवन था। वह अपने जीवन के प्रारम्भिक चरण में ही वह देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में शामिल हो गये थे। वह एक महान् देश भक्त थे और वह विभिन्न अवसरों पर अपने देश की स्वतंत्रता की प्राप्ति के हेतु कारावास में गये। स्वतंत्रता आन्दोलन में अपने शामिल होने के समय के दौरान उन्होंने यह महसूस किया कि वास्तविक स्वतंत्रता तब प्राप्त की जा सकती है जब कि समाज और राज्य के स्वरूप में परिवर्तन हो। अतः उन्होंने अपने आप को अपने देश के श्रमिक वर्ग को संगठित करने के उद्देश्य के प्रति समर्पित कर दिया था क्योंकि वह हार्दिक रूप से यह महसूस करते थे कि जब तक हमारे देश के श्रमिक वर्ग को वास्तविक रूप से स्वतन्त्र नहीं कर दिया जाता, तब तक स्वतंत्रता का कोई लाभ नहीं होगा। इस लिये उन्होंने अपने आप को देश के श्रमिक वर्ग को संगठित करने के उद्देश्य के प्रति समर्पित कर दिया और शीघ्र ही वह हमारे देश के श्रमिक संघ आन्दोलन के एक विश्वासनीय नेता बन गये।

महोदय उनके निधन से, भारतीय साम्यवादी (मार्क्सवादी) दल ने एक वीर योद्धा खो दिया है। उनकी क्षति से इस सभा ने एक अच्छा सांसद खो दिया है। इसके अतिरिक्त उनके निधन से हमारे देश के श्रमिक वर्ग ने अपना एक बहादुर निष्ठावान समर्थक खो दिया है। इस सभा में हमने देखा है कि वह श्रमिक वर्ग तथा अपने देश के लोकतांत्रिक आन्दोलन का समर्थन करने वालों में एक थे।

मैं अपने दल फारवर्ड ब्लाक की ओर से शोक संतप्त परिवार तथा उस दल के जिससे वह संबंधित थे, प्रति अपनी गहरी संवेदना एवं सहानुभूति व्यक्त करता हूं। मुझे आशा है कि आप दुःख पीड़ा तथा वेदना की इस गहरी भावना को भारतीय मार्क्सवादी दल एवं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा देंगे।

श्री इब्राहीम सुलेमान सेठ (मंजेरी) : आज हम सब अपने प्रिय सहयोगी, श्री दीनेन भट्टाचार्य के बहुत ही दुखद और अचानक निधन पर शोक व्यक्त करते हैं। श्री दीनेन भट्टाचार्य के बहुत ही दुखद और अचानक निधन पर अपने दुःख को व्यक्त करने के लिए अपने आप को प्रधानमंत्री एवं सम्बद्ध दलों के अन्य नेताओं के साथ सम्बद्ध करता हूं। वह कुछ दिन पूर्व हमारे साथ थे। यह बहुत ही दुख की बात है कि उनका निधन कल रात को अस्पताल में हुआ।

उनके निधन से हमने तथा देश ने एक महान् स्वतंत्रता सेनानी खो दिया है मुझे पता चला है कि उन्होंने 14 वर्ष की छोटी आयु में अपने आप को गिरफ्तार कराया । हम से तरु भावना प्रदर्शित होती है जिसने उन्हें इस देश की स्वतंत्रा के लिये लड़ने के लिये प्रेरित किया था । वह एक पुराने श्रमिक संघी भी थे और उन्होंने अपने समस्त जीवन को पद दलितों, श्रमिक वर्ग और विशेषकर मजदूरों के प्रति समर्पित कर दिया था । वह एक महान श्रमिक संघी थे और इस प्रकार केन्द्रीय सी० आई० टी० यू० के सदस्य भी थे ।

उनके निधन से हमने एक महान व्यक्तित्व को खो दिया है। सेवा और समर्पण के एक जीवन का अन्त हो गया है ।

महोदय, मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि आप मेरी ओर से, मेरे दल इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग की ओर से शोक संतप्त परिवार को संवेदनायें पहुंचा दें । मैं अपने प्रिय सहयोगी श्री समर मुखर्जी तथा भारतीय मार्क्सवादी साम्यवादी दल के सभी सदस्यों के प्रति भी अपनी सहानुभूति व्यक्त करता हूं, क्योंकि उनकी एक महान क्षति हुई है, जो एक ऐसी क्षति है जिसे पूरा नहीं किया जा सकता । मुझे आशा है कि उनके पास इस महान क्षति को सहन करने की शक्ति होगी । भगवान करे कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले ।

श्री खवाजा मुबारक शाह (बारामूला) : जनाब स्पीकर साहब, मि० दीनेन भट्टाचार्य की अचानक मौत पर जिस रंज और गम का आपने इजहार फरमाया है और उनके बारे में जिन खयालात का इजहार दूसरे मैम्बर साहिबान ने किया है, मैं अपनी और अपनी पार्टी नेशनल कान्फ्रेंस की तरफ से उन में शरीक होता हूं । कुछ ही अर्सा हुआ मुझे उन से मिलने का इत्तिफाक हुआ था । मैंने उनके दिल को देखा है । उनके दिल में किसी के खिलाफ कोई गम नहीं था, कोई गुस्सा नहीं था, कोई नफरत नहीं थी । मैं समझता हूं कि उनके बारे में सही तौर पर यह कहा जा सकता है :

गमें दमे गुफ्तगू
नमें दमे जुस्तजू

उनका ट्रेड यूनियन के साथ, मजदूरों के साथ शरीक जुस्तजू होना, शरीके गुफ्तगू होना इस बात की गवाही है कि वह एक जिन्दा दिल रखते थे एक गर्म दिल रखते थे जिस में एक कसक थी, एक जोश था इंसानी हमदर्दी का । वह हम से जुदा हुए । लेकिन

ऐसे मरने वाले मरते हैं लेकिन फना होते नहीं
हम से वे चले जाते हैं लेकिन जुदा होते नहीं ।

मैं आपका मशकूर हूंगा, स्पीकर साहब, अगर आप मेरी तरफ से और मेरी पार्टी की तरफ से जाहिर किए गए इन खयालात और इजहारे गम को उनकी फैमिली और उनकी पार्टी तक पहुंचा दें ।

अध्यक्ष महोदय : अब सभा के सदस्य अपने दुख व्यक्त करने के लिये कुछ क्षण के लिये मौन खड़े होंगे ।

(इसके पश्चात् सदस्यगण कुछ क्षण मौन खड़े रहे ।)

अध्यक्ष महोदय : मृतक के प्रति सम्मान में सभा कल मध्याह्न पूर्व ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित होती है ।

11.35 म० पू०

तत्पश्चात लोक सभा मंगलवार, 15 जुलाई, 1980/24 आषाढ़ 1902 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई ।

MGPRRND C.R.—1 LSS/80—CR-I Dly—29-9-80—210.